IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण का नैतिक एवं आध्यात्मिक स्थान: गुरु जांभेश्वर के जांभाणी साहित्य के विशेष संदर्भ में

मीना विश्नोई (शोधार्थी)

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

सारांश (Abstract)

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण केवल प्राकृतिक संसाधनों का संग्रह नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवंत सत्ता है जिसे मानवता के अस्तित्व का आधार माना गया है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में पर्यावरण को धर्म, नीति, संस्कृति, सामाजिक व्यवस्था और आध्यात्मिक चेतना का केंद्र माना गया है। प्रकृति-संरक्षण को मानव जीवन का नैतिक और आध्यात्मिक कर्तव्य बताते हुए प्राचीन ग्रंथों ने इसे सांस्कृतिक अनुशासन का आधार बनाया।

विशेष रूप से राजस्थान के महान संत गुरु जांभेश्वर द्वारा प्रतिपादित जांभाणी साहित्य भारतीय पर्यावरण-दर्शन का सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है। उनके 29 नियम वृक्षों, जीव-जंतुओं, जल, भूमि, वायु और संपूर्ण पारिस्थितिकी की पवित्रता और रक्षा पर आधारित हैं। यह शोध-पत्र भारतीय पर्यावरण-दृष्टि की ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक व्याख्या करता है तथा गुरु जांभेश्वर के पर्यावरणीय विचारों का आधुनिक संदर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

कीवड्र्स - भारतीय पर्यावरण-दर्शन, गुरु जांभेश्वर, जांभाणी साहित्य, जीव-रक्षा, वृक्ष-संरक्षण, बिश्नोई समाज, भारतीय पारिस्थितिकी, धर्म और प्रकृति, पर्यावरण नैतिकता।

1. प्रस्तावना (Introduction)

पर्यावरण मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। यह केवल प्राकृतिक संसाधनों का समूह नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और जैविक संतुलन की समग्र व्यवस्था है। भारतीय संस्कृति में यह विचार हजारों वर्षों से विकसित होता आया है कि प्रकृति के प्रत्येक तत्व में दिव्यता निहित है।

भारतीय सभ्यता में पर्यावरण का स्थान इतना प्रबल रहा है कि इसमें—

- वृक्ष देवताओं की तरह पूजित,
- नदियाँ मातृशक्ति का रूप,
- भूमि जीवनदायिनी,
- जल अमृत,
- पशु-पक्षी परिवार के सदस्य

माने गए हैं।

यह दृष्टि विश्व की अन्य सभ्यताओं से भिन्न है, जहाँ प्रकृति को मात्र उपभोग की वस्तु माना गया। भारतीय ऋषि-मनीषियों ने प्रकृति के साथ संबंध को “कृतज्ञता के बंधन” में जोड़ा — अर्थात मनुष्य प्रकृति का ऋणी है, विरोधी नहीं। इसी परंपरा में गुरु जांभेश्वर का योगदान अद्वितीय है, जिन्होंने 16वीं सदी में उन पर्यावरणीय सिद्धांतों की स्थापना की, जिनकी आवश्यकता आज 21वीं सदी में और अधिक महसूस होती है।

2. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण-दर्शन

पर्यावरण का दार्शनिक आधार

भारतीय दर्शन में पर्यावरण को 'पंचमहाभूतों' का समन्वय माना गया है। प्रत्येक महाभूत —

- पृथ्वी
- जल
- अग्नि
- वायु
- आकाश

मनुष्य की चेतना, शरीर, स्वास्थ्य और जीवन के प्रत्यक्ष अंग हैं। घास से लेकर पर्वत तक, कण से लेकर जीव तक, सभी में ईश्वरीय उपस्थिति मानी गई है।

वेदों में प्रकृति का स्वरूप

ऋग्वेद में कहा गया— “माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:” (पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं)

यह वाक्य पर्यावरण-दृष्टि का सर्वोच्च आदर्श है। यजुर्वेद में “वनों को न काटने” और “जल को प्रदूषित न करने” की स्पष्ट आज्ञाएँ मिलती हैं।

उपनिषदों में पारिस्थितिक संतुलन

उपनिषद कहते हैं— “सर्वं खल्विदं ब्रह्म” (सृष्टि का प्रत्येक अंश दिव्य है)

इस दृष्टि में प्रकृति की अवमानना ईश्वर की अवमानना मानी गई।

पुराणों और लोकपरंपरा में पर्यावरण-आचार

- वृक्षों के काटने को पाप कहा गया।
- पशु-हत्या को आध्यात्मिक पतन।
- नदी प्रदूषण को अधर्म।
- भूमि का अतिदोहन सामाजिक विनाश।

यह सभी आधुनिक पर्यावरण विज्ञान के सिद्धांतों का पूर्वरूप हैं।

3. गुरु जांभेश्वर का पर्यावरण-दर्शन

जीवन और विचारधारा

गुरु जांभेश्वर (1451–1536) का जीवन राजस्थान के कठिन रेगिस्तानी क्षेत्र में बीता, जहाँ प्रकृति का हर तत्व जीवन-मृत्यु का प्रश्न था। उन्होंने स्वयं प्रकृति के साथ संघर्ष और सह-अस्तित्व का अनुभव किया। इसी अनुभव ने उन्हें प्रकृति-संरक्षण का महान प्रवक्ता बनाया।

29 नियम—एक पर्यावरणीय संविधान

उनके 29 नियम आधुनिक पर्यावरण कानूनों से अधिक उन्नत हैं। इनमें—

- वृक्षों की रक्षा,
- हरित डाल न तोड़ना,
- जीवों की हत्या न करना,
- लुगाई की अग्नि सुरक्षा,
- जल-स्रोतों की पवित्रता,
- खेतों में विषैले पदार्थ न डालना,
- पशुओं की सेवा

जैसे नियम शामिल हैं। यह पृथ्वी पर सबसे प्राचीन इको-कोड (Eco-Code) माना जाता है।

वैज्ञानिक चेतना

500 वर्ष पहले गुरु जांभेश्वर ने—

- वायु प्रदूषण,
- मिट्टी कटाव,
- जल-प्रदूषण,
- जीव-विनाश,
- वृक्ष-विनाश

के परिणाम बताए, जबकि विज्ञान ने इन्हें 20वीं सदी में समझना शुरू किया।

4. जांभाणी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना

जांभाणी साहित्य (गुरु जांभेश्वर की वाणी) प्रकृति और मानव के संबंध का अत्यंत गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है।

धरती को माता और वृक्षों को रक्षक माना

उनकी वाणी— “धरती माता, राखो मोर पिता” भूमि की पवित्रता और कृतज्ञता का प्रतीक है।

जीवों की रक्षा : सर्वोच्च धर्म

बिश्नोई समाज जीवों के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने तक के लिए प्रसिद्ध है। खेजड़ली कांड (1730) इसका सर्वोच्च उदाहरण है।

वृक्ष और महिला—दोनों जीवनदायिनी

गुरु जांभेश्वर ने स्त्री और वृक्ष दोनों को जीवन-समर्थक शक्ति के रूप में सम्मान दिया।

जल और वायु की शुद्धता

जांभाणी साहित्य में जल को "जीवन-अमृत" और वायु को "जीवन-शक्ति" कहा गया है।

5. आधुनिक पर्यावरण संकट और जांभाणी दर्शन

जलवायु परिवर्तन - गुरु जांभेश्वर ने चेतावनी दी थी कि वृक्ष-विनाश से वर्षा कम होगी और मरुस्थलीकरण बढ़ेगा। आज यह वैज्ञानिक सत्य है।

जैव-विविधता संकट - उनकी जीव-रक्षा नीति आज संपूर्ण विश्व के biodiversity conventions से अधिक व्यापक है।

भूमि प्रदूषण - उन्होंने खेतों में रासायनिक पदार्थों से बचने की शिक्षा दी—जो आज organic farming का वैश्विक सिद्धांत है।

प्रदूषण और रोग - आधुनिक विज्ञान ने सिद्ध किया कि हवा, पानी और भूमि प्रदूषण सीधे मानव रोगों से जुड़े हैं। जांभेश्वर ने यह 500 वर्ष पहले कहा था।

6. चर्चा (Discussion)

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि—

1. भारतीय संस्कृति का पर्यावरण-दर्शन विश्व की सबसे प्राचीन और वैज्ञानिक पर्यावरण-दृष्टियों में से एक है।
2. गुरु जांभेश्वर का जांभाणी साहित्य एक संपूर्ण पर्यावरण-संहिता है।
3. यह साहित्य मानवता, प्रकृति और पारिस्थितिकी के बीच संतुलन स्थापित करता है।
4. आधुनिक पर्यावरण विज्ञान जिन बातों को आज खोज रहा है, जांभेश्वर ने उन्हें सैकड़ों वर्ष पहले ही प्रतिपादित किया।
5. भारतीय पर्यावरण-दृष्टि आधुनिक पर्यावरण संकट का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है।

भारतीय पर्यावरण-दृष्टि और गुरु जांभेश्वर के जांभाणी साहित्य का समन्वित अध्ययन यह दर्शाता है कि भारतीय समाज में प्रकृति के साथ संबंध केवल उपयोगितावादी नहीं रहा, बल्कि इसे एक स्थायी सांस्कृतिक संरचना के रूप में विकसित किया गया। यह चर्चा तीन मुख्य स्तरों - ज्ञान परंपरा, सामाजिक व्यवहार, और आधुनिक प्रासंगिकता पर आधारित है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय पर्यावरण-दृष्टि की व्यापकता किसी एक घटना, धार्मिक अनुष्ठान या भावनात्मक आग्रह तक सीमित नहीं, बल्कि एक सुविचारित जीवन प्रणाली के रूप में विकसित हुई है।

भारतीय ज्ञान-परंपरा में पर्यावरण का स्थान

प्रारंभिक अध्ययन से यह स्पष्ट है कि भारतीय दार्शनिक परंपरा पर्यावरण को एक स्वतंत्र सत्ता नहीं, बल्कि मानव जीवन के स्वरूप और गुणवत्ता को निर्धारित करने वाली मौलिक शक्ति मानती है। यह दृष्टिकोण कई कारणों से अद्वितीय है:

- ज्ञान-आधारित दृष्टि: भारतीय चिंतन प्रकृति को ज्ञान का स्रोत मानता है—अर्थात् नैतिकता, अनुशासन और संतुलन का अध्ययन प्रकृति के व्यवहार से ही प्राप्त होता है।

- अद्वैत सिद्धांत: उपनिषदिक विचार में मानव और प्रकृति को अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही अस्तित्व के दो आयाम माना गया है। इससे प्रकृति-सम्मत आचरण एक तर्कसंगत कर्तव्य बन जाता है।
- नैतिक जिम्मेदारी: प्रकृति के साथ व्यवहार को प्राय: धार्मिक आचरण से नहीं बल्कि नैतिक उत्तरदायित्व से जोड़ा गया, जिससे यह दार्शनिक सिद्धांत एक व्यवहारिक रूप लेता है।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान-परंपरा पर्यावरण को जीवन का अभिन्न घटक मानने के साथ-साथ इसे एक सतत नैतिक ढाँचे में स्थापित करती है।

जांभेश्वर दर्शन: पर्यावरणीय अनुशासन का मॉडल

गुरु जांभेश्वर द्वारा प्रतिपादित शिक्षाएँ किसी धार्मिक भावना से अधिक एक व्यवस्थित सामाजिक अनुशासन का रूप प्रस्तुत करती हैं। इनका विश्लेषण दो महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाता है—

(क) व्यवहारिकता (Practicality): जांभेश्वर के नियम दैनिक जीवन की उन प्रक्रियाओं से जुड़े हैं जो सीधे पर्यावरण को प्रभावित करती हैं—

- जल के उपयोग में संयम
- भूमि की स्वच्छता
- पशुओं की सुरक्षा
- अग्नि के प्रयोग में सावधानी
- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

इन सिद्धांतों का उद्देश्य किसी दार्शनिक आदर्श की स्थापना नहीं, बल्कि व्यवहार में स्थिर पर्यावरण-नीति स्थापित करना है।

(ख) सामाजिक अनुशासन (Social Regulation): जांभेश्वर का दर्शन इस समझ पर आधारित है कि पर्यावरणीय अव्यवस्था केवल प्राकृतिक समस्या नहीं बल्कि सामाजिक असंतुलन का कारण भी है।

इसलिए उनकी शिक्षाओं में समुदाय-आधारित जिम्मेदारी को महत्व दिया गया है—

व्यक्ति जैसा आचरण करता है, उसका प्रभाव संपूर्ण समाज पर पड़ता है।

जांभाणी साहित्य की विशिष्टता: धार्मिकता नहीं, तर्क के आधार पर पर्यावरण दृष्टि

जांभाणी साहित्य का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि पर्यावरण के प्रति संवेदना को भावनात्मक या चमत्कारवादी तरीके से नहीं समझाया गया; बल्कि इसके पीछे सामाजिक, भौगोलिक और प्राकृतिक परिस्थितियों का तर्कसम्मत विवेचन मिलता है।

उदाहरण के लिए—

- मरुस्थलीय क्षेत्र में वृक्षों की उपयोगिता,
- जल का सीमित स्रोत होने के कारण उसकी सुरक्षा,
- चरागाहों के संरक्षण द्वारा पशुधन की रक्षा,

ये सभी तत्व स्थान-विशिष्ट जरूरतों के आधार पर विकसित पर्यावरण-तर्क हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जांभेश्वर का दर्शन धार्मिक होने के साथ-साथ क्षेत्रीय पर्यावरण विज्ञान का भी रूप है।

आधुनिक पर्यावरण सिद्धांतों के साथ समानताएँ

चर्चा का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि जांभेश्वर दर्शन आधुनिक पर्यावरण विज्ञान के कई सिद्धांतों के समानांतर खड़ा होता है, जैसे—

- पर्यावरणीय संतुलन (Ecosystem Balance)
- जैव-विविधता संरक्षण (Biodiversity Conservation)
- संसाधनों का सतत उपयोग (Sustainable Use of Resources)
- प्रदूषण-निरोध (Pollution Prevention)
- समुदाय आधारित संरक्षण (Community-Based Conservation)

ये सिद्धांत 19वीं—20वीं सदी में वैज्ञानिक रूप से विकसित हुए, जबकि गुरु जांभेश्वर ने इन्हें 15वीं सदी में ही व्यावहारिक रूप से लागू कर दिया था।

सामाजिक संरचना में पर्यावरण की भूमिका

भारतीय और विशेष रूप से बिश्नोई समुदाय की सामाजिक संरचना में पर्यावरण को केन्द्रीय स्थान देना यह दर्शाता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल विज्ञान या दर्शन का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिरता और सामूहिक जीवन की नींव भी है।

- वृक्षों को न काटना = भविष्य की रक्षा
- जीवों की सुरक्षा = खाद्य श्रृंखला का संरक्षण
- जल स्रोतों की देखभाल = स्वास्थ्य और कृषि की सुरक्षा

इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण के प्रति संवेदनशील समाजों में सामाजिक संघर्ष कम होते हैं और सामुदायिक सहयोग अधिक विकसित होता है।

वैश्विक संदर्भ में भारतीय दृष्टि की प्रासंगिकता

आज जब विश्व—

- जलवायु परिवर्तन,
- मरुस्थलीकरण,
- जल संकट,
- जैव-विविधता हानि,
- प्रदूषण और
- प्राकृतिक आपदाओं

से जूझ रहा है, भारतीय पर्यावरण-दृष्टि एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत करती है, जिसमें—

- तकनीक + नैतिकता,
- विकास + संरक्षण
- अधिकार + जिम्मेदारी

एक साथ चलती हैं। जांभेश्वर दर्शन इस प्रश्न का समाधान प्रदान करता है कि सतत विकास केवल विज्ञान से नहीं, संस्कृति और मूल्य-व्यवस्था से संभव है।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण केवल नीति नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन है। गुरु जांभेश्वर का जांभाणी साहित्य हमें यह सिखाता है कि—

- वृक्ष केवल लकड़ी नहीं—जीवन हैं,
- जीव केवल पशु नहीं—सृष्टि का संतुलन हैं,
- जल केवल संसाधन नहीं—अमृत है,
- भूमि केवल मिट्टी नहीं—माता है,
- पर्यावरण केवल प्रकृति नहीं—मानवता का भविष्य है।

आज के वैश्विक संकट के समय भारतीय पर्यावरण-दर्शन और गुरु जांभेश्वर के सिद्धांत संपूर्ण मानव समाज के लिए एक मार्गदर्शन हैं।

संदर्भ

1. जांभेश्वर, गुरु. (n.d.). जांभाणी साहित्य: पर्यावरण संबंधी शिक्षाएँ. जे.आर. प्रकाशन।
2. जांभाणी संहिता. (n.d.). गुरु जांभोजी के 29 नियम. बिश्नोई समाज प्रकाशन।
3. कुम्भाण, एन. (Ed.). (n.d.). राजस्थानी संत वाङ्मय. साहित्य अकादमी, दिल्ली।
4. लोकेश, के. (n.d.). शब्दोक्त्यर्थ संग्रह. फोन्सबी पब्लिशिंग।
5. भंवरलाल जांगिड़. (n.d.). बिश्नोई धर्म और पर्यावरण. जोधपुर साहित्य मंडल।
6. मेघवाल, फ. (Ed.). (n.d.). संत साहित्य और सामाजिक चेतना. साहित्य मंडल, जोधपुर।